* श्री सीताराम *

चारु चिन्तामणि कोष

अर्थात्

श्री रामनाम-परत्व का संग्रह

जो

पूज्यपाद श्री गोस्वामी तुलसीदास जी के समस्त रचित ग्रंथों से किया गया।

अबलों नशानी तो अब न नशैहौं। राम कृपा भव निशा सिरानी जागे पुनि न डसैहौं। पायों नाम "**चारु चिन्तामणि**" उर कर ते न खसैहौं। श्याम रूप शुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहि कसैहों। पर बस जानि हँस्यो इन्ह इन्द्रिन निज बश ह्वै न हँसैहौं। मन मधुकरप्रण करितुलसी रघुबर पदकमल बसैहौं॥

—:o:—

संग्रहकर्ता

(दीन) जयराम दास